होकर ग्यारह रह जाते हैं। दण्डी के अनुसार (काव्यादर्श '३।१२५-२६) निम्नलिखित काव्यदोष हैं—(१) निरर्थक, (२) विरुद्धार्थक" (३) अभिन्नार्थक, (४) संशययुक्त, (५) अपेक्षित शब्दहीन, (६) यतिभ्रष्ट, (७) असमवृत, (८) सन्धिरहित, (९) स्थान-समय-कला-लोक-न्यास और आगम का विरोध, (१०) अपक्रतम्। आचार्य वामन ने पूर्वोक्त आचार्यों की अपेक्षा कुछ अधिक स्पष्ट विवेचन किया है। वामन के अनुसार दोष दो प्रकार के शब्दगत और अर्थगत होते हैं। इनके भी चार भेद पद-दोष, पदार्थदोष, वाक्य-दोष और वाक्यार्थ-दोष हैं। इन्होंने शब्दगत दोषों के तीन भेद पदगत, पदार्थदोष और वाक्यगत किये हैं तथा अर्थगत के दो भेद पदार्थगत और वाक्यार्थगत माने हैं। काव्य के दोषों का सर्वाधिक स्पष्ट एवं मान्य विवेचन काव्यप्रकाशकार मम्मठ ने किया है। मम्मट के अनुसार काव्य-दोष तीन प्रकार के—शब्द-दोष, अर्थदोष तथा रस-दोष होते हैं। पद पदांश और वाक्यगत दोषों का परिगणन मम्मट शब्द-दोषों में ही करते हैं। मम्मट ने शब्द दोष सैंतीस, अर्थदोष तेईस और रसदोष दस माने हैं। शब्द-दोष के अन्तर्गत पद-दोष निम्नलिखित हैं—श्रुतिकटु, च्युतसंस्कृति, अप्रयुक्त, असमर्थ, निहतार्थ, निरर्थक, अवाचक, अश्लील, संदिग्ध, अप्रतीत, ग्राम्पनेयार्थ (पदगत-समाजगत), क्लिष्ट, अविमृष्ट-विधेयांश, विरुद्धमतिकृत। उपर्युक्त सोलह दोषों में से च्युतसंस्कृति, असमर्थ और निरर्थक दोष को छोड़कर शेष तेरह दोष वाक्य में भी होते हैं। पदांशदोष निम्नलिखित हैं—श्रुतिकटु, निहतार्थ, निरर्थक, अवाचक, व्रीड़ा, जुगुप्सा, अमङ्गलदायी, अश्लील, सन्दिग्ध, नेयार्थ।

वक्यगत दोष—प्रतिकूलवर्ण, उपहतविसर्ग, लुप्तविसर्ग, विसंधि, हतवृत, न्यूनपद, अधिकपद, कथितपद, पतत्प्रकर्ष, समाप्तपुनरात्त, अर्थान्तरैकवाचक, अभवन्मतयोग, अनभिहितवाच्य, अपदस्थपद, अपदस्थ समास, संकीर्ण, गर्भित, प्रसिद्धिहत, भग्नप्रक्रम, अक्रम, असतपरार्थ।

अर्थदोष—(१) अपुष्ट, २) कष्ट, (३) व्याहत, (४) पुनरुक्त, (५) दुष्क्रम, (६) ग्राम, (७) सन्दिग्ध, (८) निर्हेतु, (९) प्रसिद्धिविरुद्ध, (१०) विद्याविरुद्ध, (११) अनवीकृत, (१२) सनियमपरिवृत्त, (१३) अनियमपिवृत्त, (१४) विशेषपरिवृत्त, (१५) अधिशेषपरिवृत्त, (१६) साकांक्ष, (१७) अपदयुक्त, (१८) सहचरभिन्न, (१९) प्रकाशित विरुद्ध, (२०) विध्ययुक्त, (२१) अनुवादयुक्त, (२२) त्यक्तपुनः स्वीकृत तथा (२३) अश्लीलअर्थ दुष्ट।

रसदोष—(१) व्यभिचारीभाव, रस तथा स्थायीभावों का स्वशब्द द्वारा कथन, (२। अनुभाव, विभाव की कष्ट-कल्पना द्वारा अभिव्यक्ति, (३) प्रतिकूल विभाव आदि का ग्रहण (४) बार-बार दीप्ति, (५) अनवसर रस का विस्तार, (६) रस का अनवसर विच्छेद, (१०) अनङ्ग का वर्णन।

ध्वन्यालोककार ने रस-विषयक दोषों का विवेचन करते समय 'दोष' को 'अनौचित्य' शब्द से अभिहित किया है।

हिन्दी के काव्यशास्त्रियों ने भी दोषों पर विस्तार से विचार किया है। केशवदास ने 'कविप्रिया' में बाईस दोषों का विवेचन किया है।[1] चिन्तामणि ने

---

१. केशव: कविप्रिया तृतीय अध्याय

Scanned with CamScanner

शब्दगत, अर्थगत और रसगत दोषों का विवेचन किया है।[1] कुलपति मिश्र ने इस विषय में चिन्तामणि का अनुकरण किया है।[2] सोमनाथ उपर्युक्त तीन प्रकार के दोषों के अतिरिक्त 'वृत्तदोष' नामक अन्य दोषों को भी स्वीकार करते हैं।[3] भिखारी-दास शब्दगत, वाक्यगत, अर्थगत तथा रसगत दोषों को मानते हैं।[4]

निष्कर्ष यह है कि काव्य-सौन्दर्य को हानि पहुँचाने वाले तत्त्व का नाम दोष है। किन्तु सर्वत्र दोष नहीं रहते, उनका परिहार भी हो जाता है। केवल उनका परिहार ही नहीं, वे कभी-कभी गुण भी हो जाते हैं, काव्य-सौन्दर्य का उत्कर्ष भी कर देते हैं और कवि की वाणी का चमत्कार कहलाते हैं, किन्तु यह तभी होता है जबकि कवि सावधानी से कार्य करता है। अतः कहा जा सकता है कि दोष काव्य में अनित्य ही हैं।

Scanned with CamScanner